Reviews of Literature
Volume 1 , Issue 2 / Sept 2013 ISSN:-2347-2723

मराठी नाटक का मसीहा-विजय तेंदुलकर

नजीम शेख
अध्यक्ष , हिंदी विभाग श्री. विजयसिंह यादव कला व विज्ञान महाविद्यालय,पेठ वडगाव जि. कोल्हापुर

सारांश :

अपनी वैचारिक विद्रोही कृतियों द्वारा रुढिबद्ध विचारधारा को तोडनेवाले और मराठी नाटकों की परम्परा को नए सिरे से जन्म देनेवाले विजय तेंदुलकरजी अचानक हमारे बीच से चले गए। मराठी साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलानेवाले तेंदुलकरजी 'घाशीराम कोतवाल', 'सखाराम बाईंडर', 'गिधाडे' और 'शांतता... कोर्ट चालू आहे' जैसे नाटकों के माध्यम से न केवल मराठी और भारतीय भाषाओं में बल्कि विदेशी भाषाओं में भी चर्चित रहे। तभी तो श्याम बेनेगल जैसे हिन्दी के प्रसिद्ध निर्देशक ने उन के सम्बन्ध मे कहा हुआ यह वाक्य अत्यंत सार्थक लगता है - ''पिछले पचास वर्षों में पूरे भारत में ऐसा नाटककार नहीं हुआ।'' स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में भारतीय परिवेश में जिन विचारों की आवश्यकता थी उन विचारों को अत्यंत प्रभावी ढंग से विजय तेंदुलकरजी ने अभिवक्त किया। परम्परा से चले आए बाजारु और बिकाऊ नाटकों का न उन्होंने कभी अंधा अनुकरण किया और न ही कभी झुटी लोकप्रियता को गले लगाया। अपनी हर कलाकृति द्वारा उन्होंने अतिउच्च विचारों को पाठकों और दर्शकों तक पहुँचाया। उनके हर नाटक में बदलते सामाजिक संदर्भों को अत्यंत पैनी दृष्टि से रेखांकित किया गया। हिन्दी के धर्मवीर भारती के अंधा-युग के माध्यम से शुरु हुई इस विचार धारा को विजय तेंदुलकरजी ने परमोच्च स्तर तक पहुँचाया।

प्रस्तावना :

तेंदुलकरजी ने अपने समकालीन भारतीय नाटककार मोहन राकेश, बादल सरकार, गिरीश कर्नाड आदि के साथ अंग्रजी नाटककार हेनेसी विल्यम्स और टॉम स्टोपैर्ड जैसे नाटककारों को भी अपनी विचारधारा और लिखने की विशिष्ठ शैली के कारण पिछे छोडा। उनके नाटकों को पढनेवाला पाठक, देखनेवाला दर्शक, समीक्षक और लेखक चुप नही रह सकता था, इन नाटकों पर वह अपनी सहज प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करता ही था। नाटकों के विषय और विचारों की विविधता के कारण उनके नाटक न केवल मराठी और भारतीय भाषाओं तक सीमित रहे बल्कि देश की सीमाओं को लांघकर उन्होंने विदेशी भाषियों में अपना स्थान कायम किया। विचार आधुनिक और अभिव्यक्ति और भी अधिक आधुनिक इन विशेषताओं के कारण वे समकालीन नाटककारों से एक कदम आगे ही रहे। हिन्दी में मोहन राकेश और कन्नड में गिरीश कर्नाड ने जिस तरह अपने हर नाटक में रंगमंच से लेकर अभिनेता तक सभी छोटी-मोटी बातों पर ध्यान रखा उसी तरह तेंदुलकरजी भी अपने हर नाटक के दौरान रंगमंच पर साथ रहकर निर्देशक को सूचना देते रहे।

तेंदुलकरजी की सोच हरदम 'मानव' के इर्द-गिर्द घुमती रही। वे हरवक्त 'मानव' के सम्बन्ध में ही सोचने रहे। बदलते सामाजिक परिवेश में 'मनुष्य' भी कितना बदल रहा है इसका चित्रण वे अपने हर नाटक में करते रहे। 'सखाराम बाईंडर', 'घाशीराम कोतवाल', 'गिधाडे', 'शांतता... कोर्ट चालू आहे' जैसी कलाकृतियों में वे मानवीय सम्बन्धों के ताने-बाने को प्रस्तुत करते हैं, साथ ही भारतीय मध्यवर्गीय मानसिकता का सखोल अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। सामाजिक परिवेश के साथ-साथ तेंदुलकरजी को वर्तमान भारतीय राजनीति की सही समझ थी, वर्तमान राजनीति के जडों से वे खुब वाकिफ थे इसीकारण 'सखाराम बाईंडर' में व्यक्त उनके राजनीतिक विचारों ने पूरे देश में बवंडर मचाया। स्व. इंदिरा गांधी और भिद्रानवाले जैसे देश के उच्चस्तरीय राजनेताओं पर आधारित यह नाटक काफी चर्चित रहा। विषयों के साथ तेंदुलकरजी के पात्र भी विशेष रुप से स्मरण में रहनेवाले पात्र हैं। सखाराम बाईंडर का सखाराम और लक्ष्मी, घाशीराम कोतवाल का घाशीराम हमेशा स्मरण में रहनेवाले पात्र हैं। तेंदुलकरजी के नाटकों की सर्वोपरी विशेषता उनकी 'भाषा' रही। उन्होंने बाजारु और प्रोफेशनल भाषा का कभी प्रयोग नहीं किया। नाटक का हर वाक्य पाठक और दर्शक को सोचने पर मजबूर कराता रहा। उनकी लेखनी में विलक्षण ताकत थी जो पढने और सुननेवालों के मनपर

ISSN:-2347-2723

गहरा प्रभाव छोडती रही। उनके अधूरे वाक्य हरएक को नए सिरे से विचार करने बाध्य कराते रहे। तेंदुलकरजी सही अर्थ में क्रांतिकारी नाटककार रहे। उनका हर नाटक समाज से सम्बन्धित नए प्रश्नों को खडा करता रहा, विवादों को उपजाता रहा लेकिन इन विवादों में भी उनकी सोच सामाजिक परिवर्तन की रही। मानवी हिंसा, क्रौर्य, विकृति और स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का ताना-बाना उनकी हर कलाकृति में अधिक गहराई से अभिव्यक्त हुआ है। वे संवेदनशील पाठक को केवल अस्वस्थ ही नहीं करते बल्कि दु:खी बनाते हैं। सुखद नाट्य परम्परा को तोडकर वे अपने नाटकों के माध्यम से हर पाठक दर्शक को नए विचार देते हैं कि आखिर हमारी जीने की जद्दोजेहद किस लिए है। उनकी हर कलाकृति पाठक और दर्शक को अस्वस्थ करनेवाली, अपनी अंतरिक चिढ को अभिव्यक्त करनेवाली साबित हुई।

नाटकों के साथ-साथ तेंदुलकरजीने अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलाई। शुरु से ही वे एक सिद्धहस्त पत्रकार रहे। मराठी के लोकप्रिय समाचार-पत्र मराठा, महाराष्ट्र टाइम्स, लोकसत्ता आदि में वे हरदिन लोकप्रिय धारावाहिक आलेख लिखते रहे। अत्यंत प्रामाणिकता से उन्होंने अपनी पत्रकारिता के कार्य को निभाया। साथ ही ललित गद्य भी उन्होंने अत्यंत प्रभावी ढंग से लिखा। लेकिन नाटक के साथ उन्हें अधिक ख्याति हिन्दी और मराठी फिल्मी कथा लेखन से प्राप्त हुई। हिन्दी की अर्धसत्य, आक्रोश, निशांत और मंथन जैसी फिल्मे, मराठी की सामना और उंबरठा जैसी फिल्मों ने उन्हें लोकप्रियता की चरम सीमा तक पहुँचाया। इन फिल्मों को अनेक मान-सन्मान मिलने के कारण वे हिन्दी फिल्मों के प्रतिथयश निर्देशकों के संपर्क में आए, लेकिन विचारों का अंतर उन्हें एक न कर सका। हिन्दी फिल्मों की चकाचौंधभरी बाजारु दुनिया से वे कोसो दूर ही रहे, उसका बिकाउ-प्रोफेशनल रुप उन्हें रास न आ सका। जीवन के अंतिम सांस तक वे अध्ययन और लगन में रत रहे। अपने अंतिम दिनों उन्होंने कहा भी था 'लेखन मेरा श्वास है'। अस्पताल के बेड पर भी अपने लैपटॉप पर उनका लेखन जारी रहा। 'भारताच्या इतिहासाचा सामाजिक, सांस्कृतिक अंगाने अभ्यास' यह उनकी आखरी कलाकृति अधूरी ही रही।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि विजय तेंदुलकरजी के हर नाटक में समाज के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई देती है। वे सही अर्थ में समाज के शोषित वर्ग की संवेदनाओं के प्रति ईमानदार रहे, उन्हें भारतीय समाज की गहरी समझ थी। उन्होंने अत्यंत बेबाकी से स्वातंत्र्योत्तर भारतीय मध्यवर्ग समाज का तथा उसकी मानसिकता का चित्रण किया। सामाजिक परिवर्तन के लिए उन्होंने इन समस्याओं को ईमानदारी से अंकित किया। उन्होंने केवल समाज के दोषों को ही नहीं दिखाया बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए सामुहिक रुप से विरोध की आवश्यकता को सूचित किया, इसी कारण वे हरदम विवादों के घेरे में बने रहे। उनकी हर कलाकृति में विद्रोह और क्रान्ति का स्वर दिखाई देता है। वर्तमान मनुष्य के संघर्ष को वे अभिव्यक्त करते हैं। नाटकों के विषय, सामाजिक विषमता के परिणाम, शोषण के सही कारणों का विश्लेषण, व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह और उन्हें यथार्थ ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए सटिक शैली में अभिव्यक्त हुई शब्द-योजना इन कारणों से स्वातंत्र्योत्तर भारतीय भाषाओं के नाटकों के केंद्रमें विजय तेंदुलकरजी के नाटक रहे। राम गणेश गडकरी और वि. वा. शिरवाडकरजी के पश्चात मराठी साहित्य में विजय तेंदुलकरजी ही क्रान्तिकारी नाटककार कहलाए। तेंदुलकरजी का देहांत मात्र नहीं है यह क्षितिज में सूर्य के अस्त हो जाने की संध्या है। आजीवन सूर्य की तरह तपते रहे विजय तेंदूलकरजी की कलाकृतियाँ भी सूर्य की तरह ही सदा प्रकाशमान रहेंगी।